प्रतिदर्श
प्रश्न–पत्र

हिंदी 'ब' कक्षा 10

समय : **3 घंटे** पूर्णांक : **80**

निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं–'अ' और 'ब'।
2. खंड 'अ' में उपप्रश्नों सहित 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए कुल 40 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
3. खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं।
4. निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
5. दोनों खंडों के कुल 18 प्रश्न हैं। दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
6. यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

■ खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

खंड 'अ' में अपठित गद्यांश, व्यावहारिक व्याकरण व पाठ्य–पुस्तक से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न दिए गए हैं, जिनमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है।

अपठित गद्यांश

1. *निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इसके आधार पर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।* $(1\times 5 = 5)$

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि राष्ट्रीयता और जातीयता के अंगों में सबसे अधिक आवश्यक अंग एकता है और वह एकता किसी विषय विशेष में नहीं है। एकता जितनी व्यापक होगी, उतनी ही राष्ट्रीयता स्थिर होगी और वह शक्तिशाली होगी। भावों की एकता सब प्रकार की एकताओं का मूल है। भावों की एकता तभी हो सकती है, जब वे विभिन्न व्यक्ति, जिनके द्वारा राष्ट्रीयता का निर्माण होता है, अपने भावों को किसी दूसरे पर व्यक्त कर सकें। इस महान कार्य के लिए एक भाषा की अत्यंत आवश्यकता है।

साहित्य मानव जाति के उच्च–से–उच्च तथा सुंदर–से–सुंदर विचारों और भावों का वह गुच्छा है, जिसकी बाहरी सुंदरता तथा भीतरी सुगंध दोनों ही मन को मोह लेते हैं। कोई जाति तब तक बड़ी नहीं हो सकती, जब तक कि उसके भाव तथा विचार उन्नत न हों। जाति और राष्ट्र के उत्थान के साथ–साथ उस जाति या राष्ट्र के साहित्य की उन्नति भी होती है। इस प्रकार, साहित्य की अवनति उस जाति के पतन का अटल और अटूट प्रमाण है। भारत के इतिहास को लीजिए। महाभारत, रामायण तथा उपनिषद् अवश्य ही ऐसे

समय में लिखे गए थे, जब यह देश बहुत उन्नत था। यह कल्पना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है कि ऐसे ग्रंथ किसी असभ्य, बर्बर जाति के आचार्यों द्वारा लिखे गए हों। जब बौद्धों का राज्य भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गया और उनका प्रभुत्व तथा गौरव भारतवर्ष के बाहर भी फैल गया, तो पालि-साहित्य की उन्नति भी उस साम्राज्य की उन्नति के साथ-साथ होती गई।

(क) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) साहित्य मनुष्य जाति के विकसित होने का मुख्य साधन है।

कारण (R) साहित्य के माध्यम से ही मनुष्य अपने भावों व विचारों को अभिव्यक्त कर पाता है।

(*i*) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(*ii*) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(*iii*) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(*iv*) कथन (A) गलत है किंतु कारण (R) सही है।

(ख) 'एकता जितनी व्यापक होगी, उतनी ही राष्ट्रीयता स्थिर होगी और वह शक्तिशाली होगी' लेखक द्वारा ऐसा कथन दर्शाता है (1)

(*i*) एकता की व्यापकता
(*ii*) साहित्य की उदारता
(*iii*) विचारों की भिन्नता
(*iv*) मौलिक स्वतंत्रता

(ग) गद्यांश के आधार पर बताइए कि किसी जाति द्वारा विशाल रूप ग्रहण करने के लिए क्या आवश्यक है? (1)

(*i*) जाति विशेषज्ञ के लोगों से संपर्क बनाना
(*ii*) राष्ट्र निर्माण में सहयोगी होना
(*iii*) भावों और विचारों का श्रेष्ठ होना
(*iv*) भावों की एकता होना

(घ) गद्यांश के अनुसार, जाति अथवा राष्ट्र की उन्नति किस प्रकार संभव है? (1)

(*i*) साहित्यिक उन्नति द्वारा
(*ii*) एकांकी विकास द्वारा
(*iii*) सर्वाधिक प्रचार-प्रसार द्वारा
(*iv*) उच्च विचारों द्वारा

(ङ) राष्ट्रीयता और जातीयता के अवयवों में सबसे महत्त्वपूर्ण अवयव किसे माना जाता है? (1)

(*i*) विचारों को (*ii*) एकता को (*iii*) साहित्य को (*iv*) भाषा को

2. *निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इसके आधार पर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।* $(1 \times 5 = 5)$

आज हम एक स्वतंत्र राष्ट्र की स्थिति प्राप्त कर चुके हैं, राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में दो हमारे पास हैं, भौगोलिक अखंडता और सांस्कृतिक एकता। परंतु अब तक हम उस वाणी को प्राप्त नहीं कर सके हैं, जिसमें एक स्वतंत्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों को अपना परिचय देता है। बहुभाषा-भाषी देश तो और भी अनेक हैं, परंतु उनकी अविच्छिन्न स्वतंत्रता की तुलना में भारत विषम पराधीनता को झेलता रहा है। हमारी परतंत्रता भी आँधी-तूफान के समान नहीं आई। वह तो रोग के कीटाणु लाने वाले मंद समीर के समान साँस में समाकर शरीर में व्याप्त हो गई है। हमें यह ऐतिहासिक सत्य भी विस्मृत हो गया कि कोई विजेता विजित देश पर राजनीतिक प्रभुत्व पाकर ही संतुष्ट नहीं होता, क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय न पूर्ण है, न स्थायी। घटनाएँ संस्कारों में चिर जीवन पाती हैं और संस्कार के अक्षय वाहक शिक्षा, साहित्य, कला आदि हैं। दीर्घकाल से विदेशी भाषा हमारे विचार-विनिमय और शिक्षा का माध्यम ही नहीं रही। वह हमारे विद्वान और सुसंस्कृत होने का प्रमाण भी मानी जाती रही है। ऐसी स्थिति में यदि हममें से अनेक उसके अभाव में जीवित रहने की कल्पना से सिहर उठते हैं, तो आश्चर्य की बात नहीं। पर रोग की स्थिति को स्थायी मानकर तो चिकित्सा संभव नहीं होती। राष्ट्र-जीवन की पूर्णता के लिए उनके मनोजगत् को मुक्त करना होगा और यह कार्य विशेष प्रयत्नसाध्य है, क्योंकि शरीर को बाँधने वाली शृंखला से आत्मा को जकड़ने वाली शृंखला अधिक दृढ़ होती है।

(क) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए (1)

1. विदेशी शिक्षा हमारे विचार विनिमय का साधन रही है।
2. हमारे पास दूसरे राष्ट्रों को अपना परिचय देने की शक्ति है।
3. मनुष्य को संस्कार शिक्षा, कला, साहित्य आदि से प्राप्त होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(*i*) केवल 1 (*ii*) 1 और 2 (*iii*) केवल 3 (*iv*) 1, 2 और 3

(ख) सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय न पूर्ण है, न स्थायी। पंक्ति के माध्यम से लेखक एक राष्ट्र की ············ को अनिवार्य तत्त्व बता रहे हैं। (1)

(*i*) सांस्कृतिक एकता (*ii*) राजनीतिक एकता (*iii*) भौगोलिक अखंडता (*iv*) सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता

(ग) कोई राष्ट्र राजनीतिक प्रभुत्व पाकर भी संतुष्ट क्यों नहीं होता है? (1)

(*i*) क्योंकि समाज में वह अधिक पाना चाहता है
(*ii*) क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय पूर्ण और स्थायी नहीं होती
(*iii*) क्योंकि दीर्घकाल से गुलामी झेलकर राजनीति में पूर्ण विजय प्राप्त नहीं होती
(*iv*) क्योंकि केवल राजनीतिक सफलता से आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलती

(घ) हमारे राष्ट्र में राष्ट्रभाषा के प्रतिष्ठित न हो सकने का मुख्य कारण क्या था? (1)

(*i*) दीर्घकालीन पराधीनता
(*ii*) अन्य भाषाओं को महत्त्व देना
(*iii*) भौगोलिक अखंडता को अधिक महत्त्व देना
(*iv*) विषय की गंभीरता को न समझना

(ङ) राष्ट्र जीवन की पूर्णता के लिए क्या आवश्यक है? (1)

(*i*) विदेशी भाषा की मानसिकता से मुक्ति
(*ii*) मानसिक और आध्यात्मिकता शृंखला से मुक्ति
(*iii*) सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जीवन
(*iv*) विशिष्ट कार्यों में लोगों की नियुक्ति

व्यावहारिक व्याकरण

3. *निर्देशानुसार 'पदबंध' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1× 4 = 4)

(क) '<u>कबीर ने</u> ईश्वर का निवास सृष्टि के कण-कण में बताया है।' (1)

(*i*) संज्ञा पदबंध
(*ii*) सर्वनाम पदबंध
(*iii*) विशेषण पदबंध
(*iv*) क्रिया-विशेषण पदबंध

(ख) '<u>चैतन्य होते ही वह</u> उधर बढ़ने को विवश हो उठा।' रेखांकित पदबंध का भेद है (1)

(*i*) संज्ञा पदबंध (*ii*) सर्वनाम पदबंध (*iii*) विशेषण पदबंध (*iv*) क्रिया पदबंध

(ग) 'दादी ने टोपी की डंडे से <u>खूब</u> पिटाई की।' रेखांकित पदबंध का भेद है (1)

(*i*) संज्ञा पदबंध
(*ii*) सर्वनाम पदबंध
(*iii*) विशेषण पदबंध
(*iv*) क्रिया-विशेषण पदबंध

(घ) क्रिया पदबंध का उदाहरण छाँटिए (1)

(*i*) <u>भाई साहब</u> फेल हो गए, मैं पास हो गया
(*ii*) <u>उसके चरित्र से तुमने</u> कौन-सा उपदेश लिया
(*iii*) कोई अजनबी युवक उसे नि:शब्द <u>ताके जा रहा है</u>
(*iv*) वे फिर से <u>चलने-फिरने के काबिल</u> नहीं हो सके

(ङ) 'विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा।'
इस वाक्य में विशेषण पदबंध है (1)

(*i*) अंतिम रंग-बिरंगी (*ii*) विचारमग्न तताँरा (*iii*) निहारने लगा (*iv*) बालू पर बैठकर

4. *निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1× 4 = 4)

(क) 'वजीर अली के जन्म को सआदत अली ने अपनी मौत माना।' इस वाक्य का संयुक्त वाक्य होगा (1)

(*i*) वजीर अली का जन्म हुआ और सआदत अली ने इसे अपनी मौत माना।
(*ii*) सआदत अली ने अपनी मौत मानी, क्योंकि वजीर अली का जन्म हुआ।
(*iii*) वजीर अली का जन्म हुआ, इसलिए सआदत अली ने इसे अपनी मौत माना।
(*iv*) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए। (1)

सूची I	सूची II
A. राजा घर आया, परंतु तरुण चला गया।	1. मिश्रित वाक्य
B. राजा से मिलकर रोहित बहुत खुश हुआ।	2. संयुक्त वाक्य
C. जब राजा घर में आया तो रोहित चला गया था।	3. सरल वाक्य

कूट

	A	B	C		A	B	C
(i)	3	2	1	*(ii)*	2	3	1
(iii)	2	1	3	*(iv)*	1	2	3

(ग) निम्न में से मिश्र वाक्य है (1)

(i) यदि बड़े भाई साहब सोच-समझकर अध्ययन करते, तो अवश्य सफल होते।
(ii) पेड़ों को रास्ते से हटाना शुरू कर दिया है।
(iii) लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।
(iv) मैं मंदिर भी जाऊँगा और भजन भी सुनूँगा।

(घ) 'वामीरो कुछ सचेत होने पर घर की ओर दौड़ी।' जी ने सरल और सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है।' रचना के आधार पर वाक्य का भेद है (1)

(i) मिश्र वाक्य *(ii)* विधानवाचक वाक्य
(iii) सरल वाक्य *(iv)* संयुक्त वाक्य

(ङ) 'अंग्रेजी पढ़कर विद्वान बनो।' का मिश्र वाक्य होगा (1)

(i) जब अंग्रेजी पढ़ोगे, तब विद्वान बनोगे। *(ii)* अंग्रेजी पढ़कर विद्वान बना जा सकता है।
(iii) जो अंग्रेजी पढ़ता है, वह विद्वान बनता है। *(iv)* विद्वान बनना है, इसलिए अंग्रेजी पढ़ो।

5. *निर्देशानुसार 'समास' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1× 4 = 4)

(क) 'शोकमग्न' शब्द में कौन-सा समास है? (1)

(i) बहुव्रीहि समास *(ii)* तत्पुरुष समास
(iii) द्वंद्व समास *(iv)* द्विगु समास

(ख) 'असत्य' शब्द का समास विग्रह एवं भेद होगा (1)

(i) अ और सत्य—द्वंद्व समास *(ii)* जो सत्य नहीं—कर्मधारय समास
(iii) न सत्य—तत्पुरुष समास *(iv)* इनमें से कोई नहीं

(ग) 'कुसुमायुध' शब्द के सही समास विग्रह का चयन कीजिए (1)

(i) पूजा के लिए स्थल—तत्पुरुष समास *(ii)* कुसुम है आयुध जिसका अर्थात् कामदेव—बहुव्रीहि समास
(iii) स्थल पर पूजा—द्विगु समास *(iv)* पूजा और स्थल—द्वंद्व समास

(घ) 'तिरंगा' समस्त पद का विग्रह होगा (1)

(i) तीन रंगों का समाहार *(ii)* तीन हैं जो रंग
(iii) रंगों का समूह *(iv)* रंगों में तीन

(ङ) निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए (1)

	समस्त पद		**समास**
1.	आत्मविश्वास	—	तत्पुरुष समास
2.	शुभागमन	—	अव्ययीभाव समास
3.	करकमल	—	तत्पुरुष समास
4.	गिरिधर	—	बहुव्रीहि समास

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-से सही समुलित हैं? (1)

(i) 1 और 2 *(ii)* 1 और 4
(iii) 1, 2 और 4 *(iv)* 2 और

6. *निर्देशानुसार 'मुहावरे' पर आधारित छः बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1× 4 = 4)

(क) गाँधीजी में देश सेवा की भावना ········ थी। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए (1)

(i) नाको चने चबाना *(ii)* कूट-कूटकर भरी
(iii) धज्जियाँ उड़ाना *(iv)* दिल भर आना

(ख) मुहावरे और अर्थ के उचित मेल वाले विकल्प का चयन कीजिए (1)

(i) कब्र में पैर लटकना—मृत्यु के समीप होना
(ii) ढेर करना—इकट्ठा करना
(iii) आकाश-पाताल एक करना—बहुत पश्चाताप करना
(iv) गाँठ बाँधना—बहुत अनुभव प्राप्त करना

(ग) 'चालाक होना' अर्थ के लिए सही मुहावरा है (1)

(i) थुड़ी-थुड़ी होना *(ii)* पेट में दाढ़ी होना
(iii) दमड़ी के तीन होना *(iv)* दूध का धुला होना

(घ) चीन अब भारत की सीमाओं पर ······ है। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए (1)

(i) आँख लगाए हुए *(ii)* कान लगाए हुए
(iii) मुँह लगाए हुए *(iv)* नाक लगाए हुए

(ङ) 'बहुत खुश होना' अर्थ के लिए उपयुक्त मुहावरा है (1)

(i) छाती भर आना *(ii)* जामे से बाहर होना
(iii) डंका बजाना *(iv)* फूला न समाना

(च) रेखांकित अंश के लिए कौन-सा मुहावरा प्रयुक्त करना उचित रहेगा? (1)

आज के युग में जिद्दी लोग पीछे रह जाते हैं।

(i) कुत्ते की दुम *(ii)* टेढ़ी खीर
(iii) अड़ियल टट्टू *(iv)* अरण्य रोदन

पाठ्य–पुस्तक

7. *निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए।* (1× 5 = 5)

रहो न भूङल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करें,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने क्या प्रेरणा दी है? (1)

(i) ईश्वर का स्मरण करने की *(ii)* धन के उन्माद में अहंकारी न होने की
(iii) संघर्षों से न घबराने की *(iv)* अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की

(ख) 'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में' पंक्ति का भाव है (1)

(i) मनुष्य को कभी भी धन पर घमंड नहीं करना चाहिए *(ii)* स्वयं को सुरक्षित नहीं समझना चाहिए
(iii) हम अपने आपमें पूर्ण हैं *(iv)* हम उन्नति के लिए सक्षम होने चाहिए

(ग) कवि ने अति भाग्यहीन किसे कहा है? (1)

(i) जो डरता रहता है *(ii)* जो मदांध है
(iii) जो धैर्य नहीं रखता *(iv)* जो उच्चता का भाव रखता है

(घ) पद्यांश के आधार पर बताइए कि यहाँ कोई अनाथ क्यों नहीं है? (1)

(i) क्योंकि समाज सबका ध्यान रखता है *(ii)* क्योंकि सबको परिवार का सहारा है
(iii) क्योंकि ईश्वर सबके साथ है *(iv)* क्योंकि हमें अपने परिश्रम पर विश्वास ह

(ङ) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए (1)

1. कवि के अनुसार, धन प्राप्ति मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है।
2. इस संसार में ईश्वर सबका है।

3. पद्यांश में सहज, सरल एवं भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।
4. अपने मन में अधीरता रखने वाला मनुष्य सौभाग्यशाली है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(i) केवल 1 *(ii)* 2 और 3 *(iii)* केवल 3 *(iv)* 2 और 4

8. *निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।* (1× 2 = 2)

(क) 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवित क्या संदेश देना चाहता है? (1)
(i) परोपकार की भावना का
(ii) दयालुता की भावना का
(iii) उदारता की भावना का
(iv) उपरोक्त सभी

(ख) राजा उशीनर ने अपने शरीर का मांस दान कर दिया, क्योंकि (1)
(i) वे अपने वचन की रक्षा करना चाहते थे *(ii)* वे एक पक्षी के प्राण बचाना चाहते थे
(iii) वे भूखे को भोजन खिलाना चाहते थे *(iv)* वे देवताओं की जीत व रक्षा करना चाहते थे

9. *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए।* (1 × 5 = 5)

तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता। अपने गाँववालों को ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्त्तव्य समझता था। उसके इस त्याग की वजह से वह चर्चित था। सभी उसका आदर करते। लोग वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता। दूसरे गाँवों में भी पर्व-त्योहारों के समय उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही, साथ ही आत्मीय स्वभाव की वजह से लोग उसके करीब रहना चाहते। पारंपरिक पोशाक के साथ वह अपनी कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता। लोगों का मत था, बावजूद लकड़ी की होने पर, उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा अपनी तलवार को कभी अलग न होने देता। उसका दूसरों के सामने उपयोग भी न करता। किंतु उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग-बाग तलवार में अद्‌भुत शक्ति का होना मानते थे। तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

(क) 'अपने गाँववालों को ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना वह परम कर्त्तव्य समझता था। लोग वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता।' (1)

कथन के माध्यम से ज्ञात होता है कि तताँरा था
(i) आत्मीय स्वभाव वाला, परोपकारी, कर्त्तव्यनिष्ठ *(ii)* साहसी, परोपकारी, दृढ़निश्चयी
(iii) विलक्षण प्रतिभा का धनी, समाज सुधारक, साहसी *(iv)* कर्त्तव्यनिष्ठ, संकीर्णहृदय, आत्मीय स्वभाव

(ख) तताँरा अपना परम कर्त्तव्य क्या समझता था? (1)
(i) दूसरों की सहायता करना *(ii)* अपने गाँववालों की सेवा करना
(iii) समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना *(iv)* अपनी तलवार की रक्षा करना

(ग) दूसरे गाँवों में भी पर्व-त्योहारों के समय उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता। यह दर्शाता है, तताँरा के प्रति गाँववालों का (1)
(i) मैत्रीभाव *(ii)* कर्त्तव्यबोध
(iii) आदर भाव *(iv)* अवलोकन

(घ) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) दूसरे गाँव के लोग तताँरा का सम्मान करते थे।
कारण (R) समूचे द्वीपसमूह में उसकी तलवार का आतंक था।
(i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ii) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की गलत व्याख्या करता है।
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(ङ) तताँरा के चर्चित व साहसिक कार्य का श्रेय गाँववाले किसे देते थे? (1)

(i) तताँरा की तीव्र बुद्धि को *(ii)* तताँरा की माता को
(iii) तताँरा की तलवार को *(iv)* तताँरा के स्वभाव को

10. *निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।* $(1 \times 2 = 2)$

(क) लेखक बड़े भाई साहब की किस बात से पूर्णतः सहमत हैं? (1)

(i) बड़े भाई साहब को अनुभव अधिक होने से उनमें समझ अधिक है
(ii) बड़े भाई साहब अध्ययन में होशियार हैं
(iii) बड़े भाई साहब लेखक से बहुत प्यार करते हैं
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन कलकत्ता के राष्ट्रीय ध्वजारोहण के विषय में सत्य है/हैं? (1)

1. यह 26 जनवरी, 1931 को मनाया जा रहा था।
2. कलकत्ता में वहाँ के लोगों द्वारा ही इसका संपूर्ण प्रबंध किया गया था।
3. यह छोटे रूप में मनाया जा रहा था।
4. इसके प्रचार में ही केवल दो हजार रुपये खर्च किए थे।

कूट

(i) 1 और 2 *(ii)* 2 और 4 *(iii)* 1, 2 और 4 *(iv)* केवल 2

■ खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)

खंड 'ब' में पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक–पुस्तक तथा लेखन से संबंधित वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। जिनके निर्धारित अंक प्रश्न के सामने अंकित हैं।

पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पुस्तक

11. *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए।* $(3 \times 2 = 6)$

(क) आज सब कुछ बदल गया है। पहले जहाँ समंदर था, दूर-दूर तक घने जंगल थे, वहाँ अब बस्तियाँ बन गई हैं। इन सब बस्तियों ने अनगिनत परिंदो के घर छीन लिए हैं।
आपके अनुसार बढ़ती आबादी से पर्यावरण में क्या-क्या परिवर्तन आए हैं? इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

(ख) शाम को लेखक के मित्र उसे 'टी सेरेमनी' में ले गए। चाय पीने की यह एक विधि है। इसे जापान में चा-नो-यू कहते हैं। 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर बताइए कि यह विधि क्या होती है तथा चाजीन ने किस प्रकार चाय तैयार की?

(ग) सिपाही किससे तंग आ गए थे और क्यों? 'कारतूस' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

12. *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए।* $(3 \times 2 = 6)$

(क) सुमित्रानंदन पंत के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 'पर्वत प्रदेश में पावस' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ख) आपके पाठ्यक्रम में किस कविता में मनुष्य को परोपकारी जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

(ग) आपके पाठ्यक्रम की कविता 'आत्मत्राण' में कवि की क्या कामनाएँ हैं? अपने शब्दों में संक्षेप में लिखिए।

13. *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए।* $(3 \times 2 = 6)$

(क) ठाकुरबारी का महंत जानता है कि हरिहर काका की अपनी कोई संतान नहीं है। इसी बात का फायदा उठाकर वह उनसे कहता है कि मोह-माया के जाल में नहीं पड़ना चाहिए और अपनी हिस्से की जमीन ठाकुरबारी के नाम कर देनी चाहिए।

आम आदमी की धर्म के प्रति अंध श्रद्धा को ठेकेदार किस रूप में भुनाते हैं? 'हरिहर काका' कहानी में हरिहर काका किस प्रकार इसका शिकार हुए हैं। स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर टोपी और इफ़्फ़न की दादी के आत्मीय संबंधों को स्पष्ट कीजिए एवं यह भी बताइए कि इससे आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(ग) स्कूल जाने के प्रति लेखक के मन में निराशा के भाव थे, परंतु धीरे-धीरे स्कूल के प्रति उसका आकर्षण बढ़ने लगा, ऐसा कब संभव हुआ? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

लेखन

14. *निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।* (5×1 = 5)

(क) **डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम**

संकेत बिंदु
- पारिवारिक स्थिति
- शिक्षा
- उपलब्धियाँ

(ख) **ई-कचरा : पर्यावरण के लिए खतरा**

संकेत बिंदु
- ई-कचरे की उत्पत्ति के कारण
- ई-कचरे का प्रभाव
- भारत में ई-कचरा प्रबन्धन के उपाय

(ग) **भ्रष्टाचार एक समस्या**

संकेत बिंदु
- भारत में भ्रष्टाचार की स्थिति
- भ्रष्टाचार और नैतिक पतन
- भ्रष्टाचार के कारण
- भ्रष्टाचार निवारण संबंधी उपाय

15. आप विद्यालय की छात्र-परिषद् के सचिव हैं। स्कूल के बाद विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए। (5×1 = 5)

अथवा

आपने नया कंप्यूटर खरीदा है, किंतु खरीदने के एक महीने बाद ही उसमें खराबी आ गई। आपकी शिकायत पर दुकानदार ने कोई ध्यान नहीं दिया। कंपनी के मुख्य मैनेजर को लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखकर घटना की जानकारी देते हुए अनुरोध कीजिए कि वे आपके साथ न्याय करें।

16. *निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 60 शब्दों में सूचना लिखिए।* (4×1 = 4)

आपकी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक विद्यालय में कहीं खो गई है। उसे लौटाने की अपील करते हुए 60 शब्दों में एक सूचना लिखिए।

अथवा

आप बाल भवन के निदेशक अतुल अग्निहोत्री हैं। ग्रीष्मावकाश में बाल भवन द्वारा आयोजित बाल चित्रकला कार्यशाला के लिए 60 शब्दों में एक सूचना लिखिए।

17. शूज़ कंपनी के मालिक की ओर से शूज़ की सेल का विज्ञापन 40 शब्दों में लिखिए। (3×1 = 3)

अथवा

बाढ़ पीड़ितों की मदद हेतु एक निजी संस्था की ओर 40 शब्दों में विज्ञापन लिखिए।

18. 'भाग्य नहीं कर्म फलते हैं' विषय पर लघु कथा लगभग 100 शब्दों में लिखिए। (5×1 = 5)

अथवा

आपके मोहल्ले के पार्क में कई अनधिकृत खोंमचे वालों ने डेरा जमा लिया है, उन्हें हटाने के लिए नगर-निगम के अधिकारी को एक ई-मेल लिखिए। (शब्द-सीमा लगभग 100 शब्द)

व्याख्या सहित **उत्तर**

1. ***(क)*** *(iii)* **कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है** साहित्य मानव जाति के उच्च-से-उच्च तथा सुंदर-से-सुंदर विचारों और भावों का वह गुच्छा है, जिसकी बाहरी सुंदरता तथा भीतरी सुगंध दोनों ही मन को मोह लेते हैं। कोई जाति तब तक बड़ी नहीं हो सकती जब तक कि उसके भाव तथा विचार उन्नत न हों।

(ख) *(i)* **एकता की व्यापकता** प्रस्तुत कथन दर्शाता है कि राष्ट्रीयता में स्थिरता तथा शक्ति का समावेश एकता की व्यापकता से होता है। एकता जितनी व्यापक होगी, उतनी ही राष्ट्रीयता स्थिर होगी और वह शक्तिशाली होगी। भावों की एकता सब प्रकार की एकताओं का मूल है।

(ग) *(iii)* **भावों और विचारों का श्रेष्ठ होना** गद्यांश के आधार पर किसी जाति द्वारा विशाल रूप ग्रहण करने के लिए भावों और विचारों का श्रेष्ठ होना आवश्यक है। कोई जाति तब तक बड़ी नहीं हो सकती है जब तक कि उसके भाव तथा विचार उन्नत न हों। जाति और राष्ट्र के उत्थान के साथ-साथ उस जाति या राष्ट्र के साहित्य की उन्नति भी होती है।

(घ) *(i)* **साहित्यिक उन्नति द्वारा** गद्यांश के अनुसार, जाति अथवा राष्ट्र की उन्नति साहित्यिक उन्नति द्वारा सम्भव है। जाति और राष्ट्र के उत्थान के साथ-साथ उस जाति या राष्ट्र के साहित्य की उन्नति भी होती है। इस प्रकार साहित्य की अवनति उस जाति के पतन का अटल और अटूट प्रमाण है।

(ङ) *(ii)* **एकता को** राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि राष्ट्रीयता और जातीयता के अंगों में सबसे अधिक आवश्यक अंग एकता है और वह एकता किसी विशेष विषय में नहीं है। एकता जितनी व्यापक होगी, उतनी ही राष्ट्रीयता स्थिर होगी और वह शक्तिशाली होगी।

2. ***(क)*** *(iii)* **केवल 3** दिए गए कथनों में से सही कथन है—मनुष्य को संस्कार शिक्षा, कला, साहित्य आदि से प्राप्त होते हैं। घटनाएँ संस्कारों में चिर जीवन पाती हैं और संस्कार के अक्षय वाहक शिक्षा, साहित्य, कला आदि हैं। वह हमारे विद्वान और सुसंस्कृत होने का प्रमाण भी मानी जाती रही है।

(ख) *(iv)* **सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता** सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय न पूर्ण है, न स्थायी। पंक्ति के माध्यम से लेखक एक राष्ट्र की सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता को अनिवार्य तत्त्व बता रहे हैं। हमें यह ऐतिहासिक सत्य भी विस्मृत हो गया कि कोई विजेता विजित देश पर राजनीतिक प्रभुत्व जाकर ही संतुष्ट नहीं होता, क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय न पूर्ण है और न स्थायी है।

(ग) *(ii)* **क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय पूर्ण और स्थायी नहीं होती** कोई राष्ट्र राजनीतिक प्रभुत्व पाकर भी संतुष्ट नहीं रहता, क्योंकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनीतिक विजय न पूर्ण है और न ही स्थायी होती है।

(घ) *(i)* **दीर्घकालीन पराधीनता** हमारे राष्ट्र में राष्ट्रभाषा के प्रतिष्ठित न हो सकने का मुख्य कारण दीर्घकालीन पराधीनता था। दीर्घकाल से विदेशी भाषा हमारे विचार-विनिमय और शिक्षा का माध्यम ही नहीं रही। वह हमारे विद्वान और सुसंस्कृत होने का प्रमाण भी मानी जाती रही है।

(ङ) *(i)* **विदेशी भाषा की मानसिकता से मुक्ति** राष्ट्र जीवन की पूर्णता के लिए विदेशी भाषा की मानसिकता से मुक्ति आवश्यक है। आज हम एक स्वतन्त्र राष्ट्र की स्थिति प्राप्त कर चुके हैं। राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में दो हमारे पास हैं भौगोलिक अखण्डता और सांस्कृतिक एकता, परन्तु अब तक हम उस वाणी को प्राप्त नहीं कर सके हैं, जिसमें एक स्वतन्त्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों को अपना परिचय देता है।

3. ***(क)*** *(i)* संज्ञा पदबंध

(ख) *(ii)* सर्वनाम पदबंध

(ग) *(iv)* क्रिया-विशेषण पदबंध

(घ) *(iii)* कोई अजनबी युवक उसे निःशब्द <u>ताके जा रहा है</u>

(ङ) *(i)* अंतिम रंग-बिरंगी

4. ***(क)*** *(i)* वजीर अली का जन्म हुआ और सआदत अली ने इसे अपनी मौत माना।

(ख) *(ii)* 2 3 1

(ग) *(i)* यदि बड़े भाई साहब सोच-समझकर अध्ययन करते, तो अवश्य सफल होते।

(घ) *(iii)* सरल वाक्य

(ङ) *(iii)* जो अंग्रेजी पढ़ता है, वह विद्वान बनता है।

5. ***(क)*** *(ii)* तत्पुरुष समास

(ख) *(iii)* न सत्य—तत्पुरुष समास

(ग) *(ii)* कुसुम है आयुध जिसका अर्थात् कामदेव-बहुव्रीहि समास

(घ) *(i)* तीन रंगों का समाहार

(ङ) *(ii)* 1 और 4

6. *(क)* *(ii)* कूट-कूटकर भरी
(ख) *(i)* कब्र में पैर लटकना—मृत्यु के समीप होना
(ग) *(ii)* पेट में दाढ़ी होना
(घ) *(i)* आँख लगाए हुए
(ङ) *(iv)* फूला न समाना
(च) *(iii)* अड़ियल टट्टू

7. *(क)* *(ii)* **धन के उन्माद में अहंकारी न होने की** प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करने की सलाह दी है। हमें तुच्छ धन-सम्पत्ति पर अहंकार कर मनुष्यता की प्रवृत्तियों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। अपनी मदांधता में स्वयं को वर्चस्वशाली तथा अन्य लोगों को अनाथ समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए।

(ख) *(i)* **मनुष्य को कभी भी धन पर घमंड नहीं करना चाहिए** प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि मनुष्य को कभी भी धन पर घमंड नहीं करना चाहिए। कुछ लोग धन प्राप्त होने पर स्वयं को सुरक्षित व सनाथ समझने लगते हैं, परंतु उन्हें सदा सोचना चाहिए कि इस दुनिया में कोई अनाथ नहीं है।

(ग) *(iii)* **जो धैर्य नहीं रखता** कवि ने अति भाग्यहीन उसे कहा है, जो धैर्य नहीं रखता है। अतः जो भी मनुष्य अपने मन में अधीरता रखता है, वह बहुत अभागा है। सच्चा मनुष्य तो वही है, जो दूसरे मनुष्यों के काम आता है। उनके लिए जीता और मरता है।

(घ) *(iii)* **क्योंकि ईश्वर सबके साथ है** पद्यांश के आधार पर यहाँ कोई अनाथ इसलिए नहीं है, क्योंकि ईश्वर सबके साथ है। मनुष्य को अनाथ समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए। कवि का मानना है कि ईश्वर ही सृष्टिकर्ता है और वह किसी को अनाथ नहीं रहने देता, क्योंकि उसकी विशाल भुजाएँ हमेशा सहायता के लिए उठी रहती हैं।

(ङ) *(ii)* **2 और 3** दिए गए कथनों में से सही कथन हैं—इस संसार में ईश्वर सबका है। वह सबको सुरक्षा व सहारा देता है। पद्यांश में सहज, सरल एवं भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली का प्रयोग किया गया है।

8. *(क)* *(iv)* **उपरोक्त सभी** मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि ने मनुष्य को परोपकार, दयालुता और उदारता की भावना को अपनाने का संदेश दिया है।

(ख) *(ii)* **वे एक पक्षी के प्राण बचाना चाहते थे** गाँधार देश के राजा उशीनर ने एक पक्षी के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का मांस दान कर दिया। उसी प्रकार कुंती पुत्र दानवीर कर्ण ने अपने वचन की रक्षा के लिए अपने शरीर के अंग कवच और कुंडल भी दान कर दिए थे।

9. *(क)* *(i)* **आत्मीय स्वभाव वाला, परोपकारी, कर्त्तव्यनिष्ठ** गद्यांश के अनुसार, लोग वक्त मुसीबत में तताँरा का स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता था। इससे पता चलता है कि तताँरा आत्मीय स्वभाव वाला, परोपकारी और कर्त्तव्यनिष्ठ था। वह हमेशा दूसरों की सहायता करता था और दूसरों की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझता था।

(ख) *(iii)* **समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना** तताँरा एक नेक और मददगार युवक था, जो अपने गाँव की ही नहीं, बल्कि समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्त्तव्य समझता था।

(ग) *(iii)* **आदर भाव** गद्यांश में बताया गया है कि दूसरे गाँव में भी तताँरा को पर्व-त्योहारों के समय विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता था। यह दूसरे गाँववालों का तताँरा के प्रति आदर भाव दर्शाता है। तताँरा केवल अपने गाँववालों की ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपसमूह के लोगों की जरूरत पड़ने पर सहायता करता था और इसीलिए दूसरे गाँवों में भी तताँरा का बहुत आदर सत्कार होता था।

(घ) *(iii)* **कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की गलत व्याख्या करता है** गद्यांश के अनुसार, दूसरे गाँव के लोग तताँरा का सम्मान करते थे, क्योंकि मुसीबत के समय वह उनकी सहायता करता था। समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझता था। अपने इस त्याग की वजह से वह चर्चित था और सभी उसका आदर करते थे। समूचे द्वीपसमूह में उसकी तलवार का कोई आतंक नहीं था, किंतु उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग उसकी तलवार में अद्‌भुत शक्ति का होना मानते थे।

(ङ) *(iii)* **तताँरा की तलवार को** लोगों का मानना था कि तताँरा की तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति है, जिससे वह सभी साहसिक कार्य करता है, इसीलिए गाँववाले उसकी तलवार को उसके चर्चित साहसिक कार्यों का श्रेय देते थे।

10. *(क)* *(i)* **बड़े भाई साहब को अनुभव अधिक होने से उनमें समझ अधिक है** लेखक बड़े भाई साहब की सलाह, व्यावहारिक अनुभव अधिक होने से उनमें समझ अधिक है और वह भविष्य के लिए कैसे अपने बचपन का गला घोंट रहे हैं। उनकी बातें सुनकर छोटे भाई की आँखें खुल गईं। उसे समझ आ गया कि उसके अव्वल आने के पीछे बड़े भाई की ही प्रेरणा रही है। अतः वे अपने बड़े भाई साहब की उपरोक्त बातों से सहमत हैं।

(ख) *(iii)* **1, 2 और 4** दिए गए कथनों में से कलकत्ता के राष्ट्रीय ध्वजारोहण के विषय में सत्य कथन हैं—यह 26 जनवरी, 1931 को मनाया जा रहा था। कलकत्ता में वहाँ के लोगों द्वारा ही इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध किया गया था। इसके प्रचार-प्रसार में केवल दो हजार रुपये खर्च किए गए थे।

11. *(क)* बढ़ती हुई आबादी से पर्यावरण असन्तुलित हो गया है। आवासीय स्थलों को बढ़ाने के लिए वन, जंगल यहाँ तक कि समुद्रस्थलों को भी छोटा किया जा रहा है। पशु-पक्षियों के लिए स्थान नहीं हैं। इन सब कारणों से प्राकृतिक का सन्तुलन बिगड़ गया है और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। कहीं भूकम्प, कहीं बाढ़, कहीं तूफान, कभी गर्मी, कभी तेज वर्षा के कारण कई बीमारियाँ हो रही हैं। इस तरह पर्यावरण के असन्तुलन का जन जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। पृथ्वी एक मात्र ऐसा ग्रह है, जहाँ जीवन सम्भव है, लेकिन बढ़ती जनसंख्या ने पृथ्वी पर मौजूद पारिस्थितिकी तन्त्र को प्रभावित किया है। बढ़ती जनसंख्या आज सम्पूर्ण विश्व के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर आ रही है।

जनसंख्या वृद्धि एक महत्त्वपूर्ण कारण है, जो देश के विकास के सामने समस्या है। ऐसा माना जाता है यदि भारत ने अपनी जनसंख्या वृद्धि दर पर नियन्त्रण नहीं किया, तो वर्ष 2040 तक भारत विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश बन जाएगा। जनसंख्या वृद्धि के कई कारण हैं–जलवायु, अशिक्षा, निर्धनता, रूढ़िवादिता, गलत अवधारणाएँ, लड़के की चाह आदि।

(ख) 'टी-सेरेमनी' जापान में चाय पीने की एक विधि है। जापानी में इसे चा-नो-यू कहते हैं। इस विधि में शान्ति को प्रमुखता दी जाती है इसलिए चाय पीने के स्थान पर एक साथ तीन लोगों से अधिक को प्रवेश नहीं दिया जाता है। एक बहुमंजिला इमारत की छत पर दफ्ती की दीवारों तथा चटाई जमीन वाली एक सुन्दर पर्णकुटी होती है। बाहर मिट्टी के बर्तन में पानी भरा होता है। हाथ-पैर धोकर और तौलिए से पोंछकर अंदर प्रवेश किया जाता है।

चाजीन अँगीठी सुलगाकर चाय तैयार करता है। बर्तन तौलिए से साफ करके चाय को प्यालों में डालकर अतिथि के सामने लाता है प्याले में दो घूँट से ज्यादा चाय नहीं होती, वहाँ होठों से प्याला लगाकर बूँद-बूँद करके चाय पी जाती है। करीब डेढ़ घण्टे तक यह सिलसिला जारी रहता है।

(ग) सिपाही वजीर अली से तंग आ गए थे, क्योंकि वे कई हफ्तों से जंगल में डेरा डाले पड़े थे, परंतु वजीर अली फिर भी नहीं पकड़ा गया। अब सभी सिपाही जंगल की कष्ट भरी जिंदगी से तंग आ चुके थे। अवध के अपदस्थ नवाब वजीर अली ने विद्रोह कर दिया था तथा गोरखपुर के निकट जंगलों में वह सक्रिय था। ब्रिटिश कम्पनी उसे गिरफ्तार करना चाहती थी। इसलिए कर्नल कालिंज के नेतृत्व में सैनिकों की एक बटालियन जंगल में खेमा डाले पड़ी थी।

12. *(क)* पंत के काव्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता शब्दों का सुंदर चयन है, जिससे भावों, मुद्राओं एवं वस्तुओं का सजीव चित्र उपस्थित हो जाता है। उनकी कोमल मधुर भाषा में तत्सम एवं देशज शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है। कविता को जीवंत एवं प्रासंगिक बनाने के लिए उन्होंने अपनी कविता में अंग्रेज़ी शब्दों के अतिरिक्त उर्दू एवं फ़ारसी शब्दों का भी प्रयोग किया है। हिंदी के सुकुमार कवि पंत ने अपने काव्य में रूपक, उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास, मानवीकरण आदि अलंकारों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया है। इसके कारण सहज एवं सरल भाषा भी अत्यधिक प्रभावी बन गई है। उनके काव्य को पढ़ने से प्रकृति के साक्षात्कार की अनुभूति होती है। प्रसंगवश भाषा ओजपूर्ण होने पर उसकी कोमलता अक्षुण्ण बनी रहती है। वस्तुतः पंत के काव्य का भावपक्ष एवं शिल्पपक्ष दोनों ही अत्यधिक समृद्ध हैं।

(ख) 'मनुष्यता' कविता में मनुष्य को परोपकारी जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। मैथिलीशरण गुप्त जी कहते हैं कि मनुष्य को परोपकारी जीवन व्यतीत करना चाहिए। उसे अपने या अपनों के हित-चिंतन से अधिक दूसरों के हित-चिंतन में संलग्न होना चाहिए। केवल अपने बारे में सोचना पशु-प्रवृत्ति है अर्थात् जो मनुष्य केवल अपने बारे में सोचता है, वह पशु के समान जीवन जीता है। पशु जब चरागाह में होता है, तो केवल अपने चरने की चिंता करता है। मनुष्यों को एक-दूसरे के बारे में सोचना चाहिए, यही मनुष्यता है। उदारता, सहानुभूति तथा बंधुत्व मानवता अर्थात् मनुष्यता के प्रमुख गुण हैं। परोपकारी तथा उदार मनुष्य को दुनिया सदैव याद रखती है। वे व्यक्ति मरकर भी अमर हो जाते हैं, जो अपना संपूर्ण जीवन मानव हितार्थ समर्पित कर देते हैं।

(ग) 'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से यह कामना करता है कि वह उसकी दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में भले ही मदद न करें, पर वह इतना अवश्य चाहता है कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं और इन पर विजय प्राप्त कर सके। वह अपने बल-पौरुष पर भरोसा करता है, वह प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता है। प्रभु उसे इतना निर्भय बना दें कि वह जीवन में उत्तरदायित्वों के भार को आसानी के साथ वहन कर सके। कवि कामना करता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे।

13. *(क)* आम आदमी के प्रति अंध श्रद्धा को ठेकेदार इस रूप में भुनाते हैं कि 'हरिहर काका' उनका शिकार हो जाते हैं, जब ठाकुरबारी में महंत ने हरिहर काका को समझाया कि यदि वह अपनी जमीन को ठाकुरबारी के नाम लिख देंगे, तो उनका नाम अमर हो जाएगा और समाज में उनका सम्मान बढ़ जाएगा। तब उन्हें लगा कि उन्हें इस पुण्य अवसर को ठुकराना नहीं चाहिए। दूसरी ओर उन्होंने यह सोचा कि उसके भाइयों का परिवार भी तो अपना ही परिवार है। यदि वह अपने भाइयों को अपनी जमीन-जायदाद का हिस्सा नहीं देते, तो यह अपने परिवार से विश्वासघात करने जैसा होगा। चाहे कुछ भी हो जाए परिवार के सदस्य ही तो अंतिम समय तक काम आते हैं। यही सब सोचकर हरिहर काका असमंजस की स्थिति में आ गए और किसी, को भी कुछ नहीं कह पाए।

(ख) टोपी और इफ्फन की दादी अलग-अलग धर्मों से होते हुए भी जिस तरह से स्नेह की डोर को एक-दूसरे से बाँधे रखती थीं, वह मानवीय मूल्यों की दृष्टि से प्रत्येक समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श बन सकते हैं। टोपी कट्टर हिंदू परिवार से था, जबकि इफ्फन की दादी मुसलमान परिवार से जुड़ी थीं। दोनों के बीच धर्मों की भिन्नता होने के बावजूद टोपी को इफ्फन की दादी से अत्यधिक अपनापन मिला। इस अकेलेपन को दोनों ने आपसी प्रेम व सम्मान की भावना से एक-दूसरे के लिए बाँटकर साझा करके समाप्त किया। दोनों के बीच न तो धर्म की समानता थी, न संस्कृति की और न ही उम्र की। इसके बदले दोनों के प्रति अपार प्रेम व स्नेह की भावना थी। दोनों एक-दूसरे के बिना स्वयं को अकेला महसूस करती थीं।

(ग) लेखक को बचपन में स्कूल कभी भी खुशी से भागे जाने की जगह नहीं लगी। चौथी कक्षा तक लेखक अपने कुछ सहपाठियों की तरह रोते-चीखते ही स्कूल पहुँचता था। उसके मन में स्कूल के प्रति एक प्रकार का भय समाया हुआ था। कई बच्चे तो तालाब में किताब-कॉपियों को फेंक पढ़ाई को ही तिलांजलि दे चुके थे। स्कूल में जीवन नीरस तथा कैदी-सा प्रतीत होता था। स्कूल के प्रति लेखक के मन में निराशा के भाव होते हुए भी धीरे-धीरे स्कूल उसे भाने लगा। यह तब संभव हुआ, जब स्काउटिंग के अभ्यास का अवसर लेखक को मिला। नीली-पीली झंडियों को हिलाते हुए उसे परेड करना अच्छा लगता था और इस कारण स्कूल के प्रति उसका आकर्षण भी बढ़ गया।

14. (क) **डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

भारत भूमि ऋषियों-मुनियों और अनेक कर्मवीरों की भूमि है। यहाँ अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं। इन्हीं में एक नाम है-डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम। देश उन्हें जनता के राष्ट्रपति के नाम से जानता है। डॉ. अब्दुल कलाम हमेशा अपनी सादगी और अनुशासन के लिए जाने जाते हैं। डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम् नामक कस्बे में हुआ था। इनके पिता का नाम जनुलाब्दीन और माता का नाम अशियम्मा था। इनके पिता पढ़े-लिखे मध्यमवर्गीय व्यक्ति थे। इनकी माता आदर्श महिला थी। इनके पिता और रामेश्वर मन्दिर के पुजारी में गहरी मित्रता थी, जिसका असर कलाम के जीवन पर भी पड़ा। इनके पिता रामेश्वर से धनुषकोडि तक आने के लिए तीर्थयात्रियों के लिए नौकाएँ बनवाने का कार्य किया करते थे।

डॉ. कलाम की प्रारम्भिक शिक्षा तमिलनाडु में हुई। इसके बाद वे रामनाथपुरम् के स्कूल में गए। अब्दुल कलाम ने अपनी आरम्भिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने वर्ष 1950 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अन्तरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। वर्ष 1972 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़े। वहाँ इन्हें भारत का पहला स्वदेश उपग्रह (S.L.V. III) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल हुआ। इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसे प्रक्षेपास्त्रों को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। मिसाइल कार्यक्रम को नई ऊँचाई तक ले जाने के कारण उन्हें मिसाइल मैन कहा जाता है।

18 जुलाई, 2002 को कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत द्वारा भारत का राष्ट्रपति चुना गया और इन्हें 25 जुलाई, 2002 को संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। इनका कार्यकाल 25 जुलाई, 2007 तक रहा। डॉ. कलाम ने बड़े ही परिश्रम से परमाणु एवं अन्तरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाई तक पहुँचाया। उसके लिए वर्ष 1997 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 1981 में पद्म विभूषण एवं वर्ष 1990 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया। 'भारत रत्न' से सम्मानित होने वाले वे देश के तीसरे वैज्ञानिक हैं। इसके साथ ही उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से भी नवाजा गया; जैसे—इंदिरा गाँधी अवार्ड, वीर सावरकर अवार्ड आदि।

(ख) ई-कचरा : पर्यावरण के लिए खतरा

जब हम इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को लंबे समय तक प्रयोग करने के पश्चात् उसको बदलने/खराब होने पर दूसरा नया उपकरण प्रयोग में लाते हैं, तो इस निष्प्रयोज्य खराब उपकरण को ई-कचरा कहा जाता है। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर, मोबाइल फोन, प्रिंटर्स, फोटोकॉपी मशीन, इन्वर्टर, यूपीएस, एलसीडी/टेलीविजन, रेडियो, डिजिटल कैमरा आदि। वर्तमान युग तकनीकी का युग है, जिसके कारण नई-नई एवं उन्नत तकनीकी के चलते इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जो ई-कचरे की समस्या को बढ़ा रहा है। यह बायोडिग्रेडेबल नहीं होने के कारण मानव स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालता है। ई-कचरा वायु प्रदूषण का प्रमुख कारण होता है।

इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं में उपस्थित भारी धातुएँ; जैसे-लेड, बेरियम, मरकरी, लिथियम आदि भू-जल को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं, जिसके कारण प्रदूषित जल का उपयोग करने से लोग कई प्रकार की जलजनित बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। ई-कचरों के केमिकल्स के कारण मनुष्य व अन्य प्राणियों के ब्रेन, हार्ट, लिवर, किडनी आदि खराब हो जाते हैं। इस प्रकार ई-कचरे की समस्या को कम करने एवं इसके दुष्प्रभाव से बचने हेतु ग्रीन पीसी की अवधारणा पर बल दिया जाना चाहिए, जिससे ऐसे उत्पादित कंप्यूटरों में बिजली खपत कम होगी, साथ ही ये पर्यावरण को उतना नुकसान भी नहीं करेंगे।

(ग) भ्रष्टाचार : एक समस्या

भ्रष्टाचार हमारे देश के लिए विकट समस्या है अखबार के पन्नों को पलटिए, विभिन्न चैनलों की खबरों को देखिए, भ्रष्टचार ही भ्रष्टाचार मिलता है। शिष्टाचार के लिए विख्यात भारत आज घोटालों और भ्रष्टाचार का केन्द्र हो गया है। आज राजनेता से लेकर नौकरशाह तक और प्रधानमन्त्री से लेकर आम सन्तरी तक सब पर भ्रष्टाचार के छींटे पड़े मिलते हैं। कोई भी नैतिक जिम्मेदारी से समाज की सेवा करता नहीं दिखता है। सबकी आँखों पर पैसे की भूख और भ्रष्टाचार के काले दाग पड़े दिखते हैं।

''आज का भ्रष्टाचारी ही शिष्टाचार बन गया है'' भ्रष्टाचार का अर्थ भ्रष्ट आचरण से है अर्थात् अपने आचार और नियमों के प्रति गिरा हुआ काम करना तथा दूसरों के अधिकारों का हनन करना ही भ्रष्टाचार कहलाता है, जो अनैतिक तथा सामाजिक नियमों के विरुद्ध होता है।

भ्रष्टाचार के निम्नलिखित कारण हैं

1. चुनाव प्रणाली का दोष युक्त होना
2. उच्च जीवन स्तर की लालसा
3. भ्रष्ट मंत्री एवं शासक
4. शिक्षा का गिरता स्तर

भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय

1. **उच्च शिक्षा का प्रसार** यदि भ्रष्टाचार को दूर करना हो, तो हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को उच्च करना होगा, जिससे कि सोचने-समझने की क्षमता में विस्तार हो सके।
2. **प्रशासकीय सुधार** यदि भ्रष्टाचार को समाप्त करना है, तो हमें प्रशासकीय सुधार करना आवश्यक है, क्योंकि जो लोग रिश्वत लेते हैं, उन्हें तुरन्त नौकरी से निकाल देना चाहिए।
3. **दण्ड व्यवस्था में सुधार** भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए दण्ड व्यवस्था में सुधार करना होगा, जो लोग भ्रष्टाचार फैलाते हैं, उन्हें कड़ी-से-कड़ी सजा हो।
4. **समाज-कल्याण संस्थाओं की स्थापना** भ्रष्टाचार को रोकने में समाज-कल्याण की संस्थाओं पर बल देना चाहिए।

अतः भ्रष्टाचार एक बहुत ही गंभीर समस्या है इसे दूर करने के लिए कदम उठाने की जरूरत है, जिसमें प्रशासन के साथ-साथ आम-जन की भागीदारी होनी चाहिए।

15. परीक्षा भवन,
दिल्ली।
दिनांक 14 अप्रैल, 20XX
सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय बाल विद्यालय,
अशोक विहार,
नई दिल्ली।
विषय : विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति हेतु।
महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय के छात्र-परिषद् का सचिव हूँ। सचिव होने के नाते मैं आपका ध्यान आगामी महीने में महिला दिवस के मौके पर होने वाली नाट्य-प्रतियोगिता की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इस प्रतियोगिता में हमारे विद्यालय के कुछ छात्र-छात्राओं ने भी हिस्सा लिया है।

विविध विद्यालयों के साथ होने वाली इस नाट्य-प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन हेतु हमें पूर्ण अभ्यास की आवश्यकता है। इसके लिए विद्यालय में रहकर सीमित समय अवधि के भीतर विद्यार्थियों को मंचन हेतु अभ्यास कराया जा रहा है, किंतु उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु इतना समय पर्याप्त नहीं है। अतः आपसे निवेदन है कि विद्यालय के बाद भी विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति दी जाए ताकि विद्यार्थी अधिकसे-अधिक अभ्यास कर नाट्य-प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करके पुरस्कार प्राप्त करें और विद्यालय का गौरव बढ़ा सकें।

धन्यवाद
भवदीय
क. ख. ग

अथवा

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
दिनांक 20 अगस्त, 20XX
सेवा में,
मुख्य प्रबंधक महोदय,
शिवम कंप्यूटर्स, गुरुग्राम।
विषय कंप्यूटर में खराबी होने की सूचना देते हुए।
आदरणीय महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से आपके पास अपनी शिकायत दर्ज कराना चाहता हूँ। मैंने 'एकता कंप्यूटर' से आपकी कंपनी का एक कंप्यूटर पिछले माह ही खरीदा था, परंतु आरंभ से ही मुझे अत्यंत परेशानी हो रही है। इसका सीपीयू सही से कार्य नहीं कर रहा है और मॉनिटर स्क्रीन भी धुँधली-सी हो गई है। मैंने इसकी शिकायत स्थानीय दुकानदार से की, परंतु आज 10 दिन बीत जाने के बाद भी कंप्यूटर ठीक नहीं किया गया। पुनः शिकायत करने पर उनके कर्मचारी भी असभ्य भाषा का प्रयोग करते हैं।

महोदय, इस प्रकार के व्यवहार से मुझे अत्यंत निराशा हुई है और यह घटना आपकी कंपनी की प्रतिष्ठा के लिए चिंताजनक है। मैं विवशतापूर्वक आपको यह पत्र लिख रहा हूँ और आशा करता हूँ कि आप मेरी समस्या का समाधान करवाने में मेरा सहयोग करेंगे।

सधन्यवाद।
भवदीय
क.ख.ग.
ब-70 दरियागंज,
दिल्ली।

16.

केन्द्रीय विद्यालय, द्वारका, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 15 मई, 20XX

गणित की महत्त्वपूर्ण पुस्तक खो जाने के संबंध में

विद्यालय के सभी छात्रगण, मेरे प्रिय सहपाठी व विद्यालय के कर्मचारीगण कृपया ध्यान दें। मैं कविता कक्षा 10वीं 'ब' की छात्रा हूँ। मेरी गणित की पुस्तक दुर्भाग्यवश मेरी लापरवाही के कारण विद्यालय में कहीं खो गई है। जिस किसी भी छात्र सहपाठी व कर्मचारी को वह पुस्तक मिले तो कृपया वह पुस्तक मेरी कक्षा के रूम नंबर 19, दूसरी मंजिल 'ए' ब्लॉक में पहुँचाने का कष्ट करें या फिर विद्यालय कार्यालय में जमा करा दें। आपकी अति कृपा होगी।

पुस्तक का नाम : 10वीं कक्षा गणित

पुस्तक पर मेरा नाम : कविता

धन्यवाद

कविता

10वीं 'ब'

अथवा

बाल भवन, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 5 जून, 20XX

ग्रीष्मावकाश में बाल भवन में आयोजित बाल चित्रकला कार्यशाला

बाल भवन में आने वाले सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि 11 जून, 20XX को बाल भवन सभागार में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जो इच्छुक छात्र चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, तो वह भाग ले सकते हैं। कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक छात्रों को पहले नाम पंजीकरण कराना आवश्यक है। इच्छुक छात्र कमरा नंबर 16 में जाकर अपना नाम लिखवा सकते हैं।

धन्यवाद

बाल भवन निदेशक

अतुल अग्निहोत्री

17.

ऑफर

पटेल शूज शॉप

सर्दी, गर्मी या बरसात
सदा निभाएँ पैरों का साथ

अपने पसंदीदा जूते खरीदने का मौका
50% तक की छूट
5 बजे से शुरू सभी कंपनियों के
जूते उपलब्ध हैं।

फुटफ्रैंड प्रा. कंपनी, अ.ब.स. नगर

अथवा

सहपाठी संस्था

जरूरतमंदों की सहायता करें

आप पुराने कपड़े, बर्तन, खाना आदि सामान देकर जरूरतमंदों की सहायता कर सकते हैं।

पीड़ में मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है।

केरल, शिमला आदि शहरों में हुई अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आ गई है। सभी लोगों से अनुरोध है कि वहाँ के निवासियों की सहायता करें तथा अपने सामर्थ्य अनुसार अपना–अपना योगदान दें।

आप पैसे, अनाज या सामान देकर उनकी सहायता कर सकते हैं।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें 9876XXXXXX

18. 'भाग्य नहीं कर्म फलते हैं'

कथा एक जंगल में चिड़िया ने आम के पेड़ पर अपना घोंसला बना रखा था। वह अपने घोंसले का बहुत ध्यान रखती थी। कुछ समय पश्चात् चिड़िया ने घोंसले में दो अंडे दिए। अब वह अपने घोंसले और बच्चों का बहुत अधिक ध्यान रखने लगी। चिड़िया अपने बच्चों के लिए समय से पहले ही दाना-पानी का प्रबंध कर देती, ताकि उसके बच्चों को कोई कष्ट न हो। बच्चे अब थोड़े बड़े हो चुके थे, चिड़िया ने उन्हें उड़ना सिखाना चाहा। काफी प्रयास के बाद भी वे पूर्णतः अपनी माता पर ही निर्भर रहते।

एक दिन जंगल में बहुत तेज आँधी-तूफ़ान आया। चारों ओर गहन अंधकार छा गया। घोंसले से बहुत दूर होने के कारण चिड़िया अपने बच्चों के पास न पहुँच सकी। उसका घोंसला टूटने ही वाला था कि चिड़िया के एक बच्चे ने दूसरे से कहा कि ''चलो उड़कर कहीं सुरक्षित स्थान पर चलते हैं'', किंतु दूसरे ने भाग्यवादी स्वर में कहा कि ''नहीं! मैं नहीं जाऊँगा, माँ आकर स्वयं हमें बचा लेगी।'' यदि मेरे भाग्य में जीवित रहना लिखा होगा, तो मैं इस तूफ़ानी रात में भी बच जाऊँगा। पहले बच्चे ने उसे बहुत समझाया, किंतु वह नहीं माना। भाग्य के भरोसे वह उसी घोंसले में बैठा रहा, जबकि पहला बच्चा उड़कर कठिन परिश्रम करके सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया और उसने अपनी जान बचा ली। इस प्रकार, भाग्य के भरोसे रहकर दूसरे बच्चे ने अपनी जान गँवा दी।

सीख इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता, मनुष्य जब तक स्वयं परिश्रम नहीं करता, तब तक उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। अतः जीवन में निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिए।

अथवा

To: nagarnigamnewdelhi@gmail.com

Subject: पार्क से खोंमचे वालों के अनधिकृत डेरों को हटाने के संबंध में

Insert: Attachments Office docs Photos From Bing Emoticons

Tahoma 10

सेवा में,
नगर–निगम अधिकारी
अ.ब.स. नगर,
नई दिल्ली

महोदय,

इस ई–मेल के माध्यम से मैं आपका ध्यान हमारे मोहल्ले के पार्क की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। हमारे मोहल्ले में एक ही पार्क है, जहाँ मोहल्ले के सभी बच्चे, युवा, महिलाएँ तथा बुजुर्ग घूमने जाते हैं, परंतु कुछ महीनों से इस पार्क के काफी बड़े हिस्से पर अनधिकृत खोंमचे वालों ने डेरा जमा रखा है, जिससे हम लोगों को वहाँ जाने में काफी परेशानी हो रही है, साथ ही वहाँ गंदगी भी बहुत बढ़ गई है।

अत: महोदय से निवेदन है कि आप पार्क को जल्द–से–जल्द अनधिकृत खोंमचे वालों के डेरों से मुक्त कराने की कृपा करें।

इसके लिए हम आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय
कृष्णकांत शर्मा

Send Discard